DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

धातुरूप

LIVE 03-06-2024 05:00 PM

धातुरूप ⇒ लकार पुरुष, वचन

↓

क्रिया के मूल रूप

पठ्

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

धातुरूप- सामान्य परिचय

जिस शब्द के द्वारा किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है उसे क्रिया कहते हैं। और क्रियापद के मूलरूप को धातु कहा जाता है।

उदाहरणार्थ- रामः पुस्तकं पठति । – पठ्

- संस्कृत साहित्य में विभिन्न अर्थों को बताने के लिए विभिन्न धातुओं का प्रयोग होता है। इनका विभाजन 10 गणों में विभक्त किया गया है।

1. भ्वादिगण ('भू' आदि धातुएँ)
2. जुहोत्यादिगण ('हु' आदि धातुएँ)
3. स्वादिगण ('सु' आदि धातुएँ)
4. 'तुदादिगण ('तुद्' आदि धातुएँ)
5. क्रयादिगण ('क्री' आदि धातुएँ)
6. अदादिगण ('अद्' आदि धातुएँ)
7. दिवादिगण ('दिव्' आदि धातुएँ)
8. रुधादिगण ('रुध्' आदि धातुएँ)
9. तनादिगण ('तन्' आदि धातुएँ)
10. चुरादिगण ('चुर्' आदि धातुएँ)

गणों के नामकरण का आधार उस गण में आने वाली पहली धातु है, जैसे- 'भ्वादिगण' का आधार उसमें सर्वप्रथम आनेवाली 'भू' धातु है (भू + आदि)। 'चुरादिगण' का आधार सर्वप्रथम आने वाली 'चुर्' धातु हैं। इसी प्रकार अन्य गणों का नामकरण भी उन प्रथम धातुओं के नाम पर ही आधारित है।

धातुएँ तीन प्रकार की होती हैं।

(i) परस्मैपदी :-

(ii) आत्मनेपदी :-

(iii) उभयपदी :-

परस्मैपदी धातुओं के वर्तमानकाल में 'ति', 'त':, 'अन्ति'
(पठति, पठतः, पठन्ति) रूप बनता है और आत्मनेपदी धातुओं में 'ते', 'इते', 'अन्ते' (सेवते, सेवेते, सेवन्ते) ।

पठ्, लिख्, गम् आदि धातुओं का परस्मैपद में प्रयोग होता है,
जबकि 'सेव्', 'मुद्', 'लभ्' आदि धातुओं का आत्मनेपद में प्रयोग किया जाता है। इनके अतिरिक्त कुछ धातुएँ ऐसी भी हैं जो उभयपदी हैं, जिनके रूप दोनों में पाए जाते हैं।

इनमें 'कृ', 'ब्रू', 'पच्' आदि धातुएँ उल्लिखित की जा सकती हैं कृ (धातु का रूप परस्मैपद में) करोति, (और आत्मने पद में) कुरुते बनता है।

उभयपदी धातुओं का यदि क्रिया फल कर्तृगामी हो अर्थात् कर्ता को प्राप्त होता हो, तो आत्मनेपद एवं परगामी अर्थात् कर्ता के अलावा किसी अन्य को प्राप्त होता हो तो परस्मैपद का प्रयोग किया जाता है।

लट् लिट् लुट् लृट् लेट् लोट् लङ् लिङ् लुङ् लृङ्

अ इ उ ऋ ए ओ। अ इ उ ऋ

काल एवं विधि आदि अर्थों के आधार पर संस्कृत व्याकरण में दस लकार पाए जाते हैं-

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

1. लट्लकार (वर्तमान काल)
2. लुट्लकार (अनद्यतन भविष्य)
3. लेट्लकार (वेद में प्रयुक्त)
4. लङ्लकार (अनद्यतन भूतकाल)
5. लुङ्लकार (अद्यतन भूतकाल)
6. लिट्लकार (परोक्ष भूतकाल)
7. लृट्लकार (भविष्य काल)
8. लोट्लकार (अनुज्ञा / आदेश)
9. लिङ्लकार (विधिलिङ् + आशीर्लिङ)
10. लृङ्लकार (हेतुहेतुमद्भावार्थे भविष्यदर्थे)

6 7 8 जून off

13 14 15 जून off

प्रत्यय · कारक संधि शब्दरूप धातुरूप

लट्लकार - वर्तमानकाल को व्यक्त करने के लिए लट्लकार का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- (i) शिक्षकः पाठं पठति ।

(ii) छात्रः गुरुं सेवते ।

लिट्लकार - लिट्लकार का प्रयोग ऐतिहासिक घटना का वर्णन करने के लिए होता है जो हमारी आँखों सामने न घटी हो ।

जैसे- (i) रामः रावणं जघान ।

(ii) कृष्णः कंसं जघान ।

लुट्लकार - भविष्य काल की क्रिया को व्यक्त करने के लिए लुट्लकार का प्रयोग किया जाता है। किन्तु यह लुट्लकार- काल अनद्यतन होना चाहिए।

जैसे- (i) श्वः प्रधानमंत्री रूसदेशं गन्ता ।

(ii) परश्वः राष्ट्रपतेः भाषणं भविता ।

लृट्लकार- सामान्य भविष्य की घटनाओं को व्यक्त करने के लिए लृट्लकार का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- (i) सः लेखं लेखिष्यति ।

(ii) छात्रः पाठं पठिष्यति ।

लेट्लकार- अनेक कालों तथा अनेक मनोभावों को प्रकट करने वाले इस लकार का प्रयोग वेद में ही पाया जाता है। लौकिक संस्कृत में इसका प्रयोग नहीं होता है।

लोट्लकार- आज्ञा देने या लेने के भाव को प्रकट करने के लिए लोट्लकार का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- (i) सः गृहकार्यं करोतु।

(ii) त्वं पाठं पठ।

लङ्लकार- अनद्यतन भूतकाल की क्रिया को बताने के लिए लङ्लकार का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- (i) रामः पाठम् अपठत् ।

(ii) सः गृहम् अगच्छत्।

विधिलिङ्- 'चाहिए', 'करें' आदि नियमात्मक भावों को प्रकट करने के लिए विधिलिङ् का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- (i) सः लेखं लिखेत्।

(ii) त्वं विद्यालयं गच्छेः ।

लिङ् का एक भेद आशीर्लिङ् भी है, जिसका प्रयोग आशीर्वाद देने के लिए होता है।

जैसे- (i) त्वं चिरायुः भूयाः ।

(ii) सः चिरायुः दीर्घायुः वा भूयात् ।

लुङ्लकार- सामान्य भूतकाल की क्रिया को प्रकट करने के लिए लुङ्लकार का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- (i) पुरा राजा नलः अभूत् ।

(ii) पाटलिपुत्रनगरम् आसीत् ।

लृङ्लकार- भाषा में कभी ऐसी स्थिति भी आ जाती है जब किसी एक क्रिया के न होने पर दूसरी क्रिया में सफलता नहीं मिलती। वैसी स्थिति में लृङ्लकार का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- यदि वर्षा अभविष्यत् तर्हि दुर्भिक्षं नाभविष्यत्।

परस्मैपदी धातुओं में लगने वाले नौ प्रत्यय निम्नलिखित हैं- तिङ् (18)

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	तिप्	तस्	झि
मध्यमः पुरुषः	सिप्	थस्	थ
उत्तमः पुरुषः	मिप्	वस्	मस्

9 – परस्मैपदी

आत्मनेपदी क्रियाओं में भी नौ प्रत्यय होते हैं-

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	त	आताम्	झ
मध्यमः पुरुषः	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तमः पुरुषः	इट्	वहि	महिङ्

लट्लकार (वर्तमानकाल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	ति	तः	अन्ति
मध्यमः पुरुषः	सि	थः	थ
उत्तमः पुरुषः	मि	वः	मः

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
ते	इते	अन्ते
से	इथे	ध्वे
इ	वहे	महे

• परस्मैपदी पठ् धातु और आत्मनेपदी सेव् धातु के रूप सभी पुरुषों और वचनों में इस प्रकार बनते हैं-

लट्लकार (वर्तमान काल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यमः पुरुषः	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तमः पुरुषः	पठामि	पठावः	पठामः

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
सेवते	सेवेते	सेवन्ते
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लङ्लकार (भूतकाल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	त् अपठत्	ताम् अपठताम्	अन् अपठन्
मध्यमः पुरुषः	. अपठः	तम् अपठतम्	त अपठत
उत्तमः पुरुषः	अम् अपठम्	आव अपठाव	आम अपठाम

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
त	इताम्	अन्त
थाः	इथाम्	ध्वम्
इ	वहि	महि

लङ्लकार (भूतकाल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यमः पुरुषः	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तमः पुरुषः	अपठम्	अपठाव	अपठाम

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
मध्यमः पुरुषः	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उत्तमः पुरुषः	स्यामि	स्यावः	स्यामः

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
स्यते	स्येते	स्यन्ते
स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
स्ये	स्यावहे	स्यामहे

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यमः पुरुषः	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तमः पुरुषः	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट्लकार (आज्ञार्थक)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	तु	ताम्	अन्तु
मध्यमः पुरुषः	हि	तम्	त
उत्तमः पुरुषः	आनि	आव	आम

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
ताम्	इताम्	अन्ताम्
स्व	इथाम्	ध्वम्
ऐ	आवहै	आमहै

(लोट्लकार (आज्ञार्थक)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यमः पुरुषः	पठ	पठतम्	पठत
उत्तमः पुरुषः	पठानि	पठाव	पठाम

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
सेवै	सेवावहै	सेवामहै

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

विधिलिङ (चाहिए के योग में)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	ईत्	ईताम्	ईयुः
मध्यमः पुरुषः	ईः	ईतम्	ईत
उत्तमः पुरुषः	ईयम्	ईव	ईम

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्ययः

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
ईत	ईयाताम्	ईरन्
ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
ईय	ईवहि	ईमहि

विधिलिङ् (चाहिए के योग में)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पुरुषः	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यमः पुरुषः	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तमः पुरुषः	पठेयम्	पठेव	पठेम

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH